रूपये के विषय में बाइबल की कहती है

यह अध्ययन, रूपये के विषय में बाइबल की कहती है के जांच करने में आपकी सहायता करेगी। यह अध्ययन आप स्वयं या समूह में कर सकते है। आपका जीवन और सेवाकार्य में यह कैसे लागू होती है उसे समझने के लिए आप समय ले।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप उल्लेखित वचनों में उत्तर को पायेंगे। अधिक समझने के लिए, इन पवित्र शास्त्र के आगे पीछे के वचनों को भी पढ़े।

1. हमारी सारी समस्याओं(रूपयों) का निदान क्या है? (मत्ती 6:33; लूका 12:33–34; 1 तीमुथियुस 6:17–19)

2. क्या होता है जब हम परमेश्वर से अधिक रूपये की खोज करते है? (सभोपदेशक 5:10–11; 1तिमुथियुस 6:10; मत्ती 6:24; कुलुस्सियों 3:5; निगर्मन 20:4–6)

3. दशमांश क्या है? हमें अपने दशमांश को किसे देना चाहिए? (उत्पत्ति 28:22ब; मलाकी 3:8–12; मत्ती 22:21)

4. हमें घुस देने से बचना और कर क्यों अदा करना चाहिए? (निर्गमन 23:8; नीतिवचन 15:27; मत्ती 22:17–22; रोमियों 13:6–7)

5. कर्ज के विषय में बाइबल क्या कहती है? (रोमियों 13:8; नीतिवचन 22:7)

6. बाइबल गरीबो की मदद के लिए क्या कहती है? (व्यावस्थाविवरण 15:10; नीतिवचन 19:17; लूका 6:34–36; लूका 12:33–34; 2 इतिहास 9:6–12; 1 युहन्ना 3:17)

7. बाइबल हमें किस पर विनिमय करना चाहिए के विषय में क्या कहती है? (लूका 8:1–3; याकूब 5:1–4; 3 यूहन्ना 5–8)

8. कलीसिया के अगुवों और सेवाकार्य को जो दान प्राप्त होता है उसमें से दशमांश क्यों देना चाहिए? (गिनती 18:26–29; 1 तिमुथियुस 3:1–5)

भजन संहिता 23:1 पर मनन कीजिए। प्रार्थना कीजिए और परमेश्वर ने आपको इस वचन में क्या दिखाया है प्रतिक्रिया कीजिए।

रूपये के विषय में बाइबल की कहती है: का उत्तर

1. हमारी सारी समस्याओं(रूपयों) का निदान क्या है? (मत्ती 6:33; लूका 12:33–34; 1 तीमुथियुस 6:17–19)
   जब हम यीशु को सब चीजों में प्रथम स्थान देते है– जब हम सच में यीशु को हमारे जीवन का प्रभु बनातें है– वह हमारी सारी जरूरतों को चाहे वह इस जीवन का हो और अनंत जीवन का दोनो को पूरा करता है

2. क्या होता है जब हम परमेश्वर से अधिक रूपये की खोज करते है? (सभोपदेशक 5:10–11; 1 तिमुथियुस 6:10; मत्ती 6:24; कुलुस्सियों 3:5; निगर्मन 20:4–6)
   यदि आप पैसा प्राप्त कर रहे हो क्योंकि आप पैसे की खोज कर रहे हो तो आपका पैसा दुःख को लायेगा। परमेश्वर से ज्यादा धन को महत्व देना मूर्तीपूजा है।

3. दशमांश क्या है? हमें अपने दशमांश को किसे देना चाहिए? (उत्पत्ति 28:22ब; मलाकी 3:8–12; मत्ती 22:21)
   दशमांश आपकी उत्पादन और आय (घर के खर्चे या कर चुकाने से पहले) का दशवा भाग (1/10) है। अब्राहम और उसके संतान (इस्त्राएल के मुख्य एवं शुरूआती लोग) जैसे कि याकूब, उन्होने अपनी उत्पादन और आय से परमेश्वर को दशमांश दिया। दशमांश परमेश्वर के लिए है और मसीही लोंगो को अपना दशमांश परमेश्वर को देना चाहिए। हम ऐसा अपनी स्थानीय कलीसिया अपनी आय का दशवा अंश देकर करते है जिस कलीसिया में हम जाते है यदि आप किसी दूसरे व्यवसाय मालिक के एक दुकानदार है तो कर के लाभ के पहले वह आपका है। मसीही लोंगो को उनका पूरा दशमांश स्थानीय कलीसिया जिसमें परमेश्वर ने उनको रखा है वहा देना चाहिए। दशमांश किसी अन्य सेवा को या भले काम के लिए नही दिया जाना चाहिए यदि आप उनकी सहायता करना चाहते हो तो आप उन्हे दान दे सकते हो जो दशमांश से अलग है और दशमांश के अतिरिक्त है।

4. हमें घुस देने से बचना और कर क्यों अदा करना चाहिए? (निर्गमन 23:8; नीतिवचन 15:27; मत्ती 22:17–22; रोमियों 13:6–7)
   हमें सबसे पहले परमेश्वर के अधिकार में रहना चाहिए और जिस जगह में रहते है वहा के नियम और कानून के अधीन भी रहना चाहिए। जिस दुनिया में हम रहते है घूस लेना स्वाभाविक हो सकता है पर यह गलत है और झूठ का एक रूप है और यह सत्य को दबाता है। बाइबल हमे न घूस लेने और न ही देने के लिए बोलती हैं। परंतु बाइबल हमसे यह कहती है कि हमे हमारे कर अदा करना हैं ताकि सरकारी कार्यकर्ता को दिया जा सके और वे हमारी और अच्छी तरह से सेवा कर सके।

5. कर्ज के विषय में बाइबल क्या कहती है? (रोमियों 13:8; नीतिवचन 22:7)
   जब हम कर्ज में पड़ते है तो हम आत्मिक बंधन में भी आ जाते है। लोग अक्सर जब वे दशमांश नही देते और जो चीज की जरूरत नही उसे खरीदते है तो कर्ज में पड़ जाते हैं। जब एक व्यक्ति के पास बहुत कर्ज हो जाता है, तो उनकी कीमत की परख और भविष्य की आशा नीचे चली जाती हैं तो वे दूसरो की जरूरतो के लिए संवेदनाहीन बन जाते है– व्यक्ति चिंता में पड़ जाता है, कर्ज का एक गुलाम और जिससे उधार लिया है उसका दास बन जाता है।

6. बाइबल गरीबो की मदद के लिए क्या कहती है? (व्यावस्थाविवरण 15:10; नीतिवचन 19:17; लूका 6:34–36; लूका 12:33–34; 2 इतिहास 9:6–12; 1 युहन्ना 3:17)

   बाइबल हमें गरीबों की सहायता करने के लिए, जरूरतमंद लोंगो पर तरस खाने के और बिना वापस पाने की आशा रखते हुए देने के विषय में सिखाती है। गरीबो की सहायता करना कुछ चीजों में से एक है जो हम कर सकते है जिसका अनंतकाल तक कीमत है। हम गरीबों के साथ कैसा व्यवहार करते है वह एक चीज है जिससे यीशु अंत में विश्वासीयों का न्याय करेगा। गरीबो की सहायता करने के लिए परमेश्वर आपको पुनः दे देगा! वह आपको आर्थिकरूप से मदद न करेगा। आप शायद अमीर नही होंगे। तथापि, वह आपको सभी प्रकार की आशीष देगा जिससे आप अपनी बुलाहट और उसके राज्य की बढ़ोतरी को पूरा करने में आपकी सहायता कर सकता है। जरूरतमंद लोगों को देने के बदले में वो आपको और अधिक देगा। वह आश्वासन देता है कि आपके पास आवश्यकता से अधिक है जो दूसरो को उदारतापूर्वक देते रहने में मदद करेगी। यदि आप उसे अनुमति दोगे तो परमेश्वर आपको दूसरो के लिए एक आशीष की नदी बनायेगा और यह परमेश्वर को स्तुती और धन्यवाद लायेगी।

7. बाइबल हमें किस पर विनिमय करना चाहिए के विषय में क्या कहती है? (लूका 8:1–3; याकूब 5:1–4; 3 यूहन्ना 5–8)

   हमें गरीबों और जरूरतमंद लोंगो की सहायता करना चाहिए (जैसे हमने उपरोक्त प्रश्न में देखा है)। यीशु ने हमें आज्ञा दिया है कि हम सब जातियों के लोगों (हर एक) को चेला बनाने और उन्हे पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देने के लिए कहा है। सेवाकार्य और लोंगो के विश्वास के विकास और बढ़ोतरी में उनके लिए और आपके लिए, यीशु में अनंत अच्छाई है! यदि आप स्वयं नही जा सकते तो आप मित्रता, मेहमाननवाजी, पैसा और प्रार्थना के द्वारा सहायता कर सकते है।

8. कलीसिया के अगुवों और सेवाकार्य को जो दान प्राप्त होता है उसमें से दशमांश क्यों देना चाहिए? (गिनती 18:26–29; 1 तिमुथियुस 3:1–5)

   कलीसिया के अगुवों और मसीही सेवाकार्य को व्यवसाय की तरह कर लाभ के पहले अपने सारे दशमांश और प्राप्त दान का दशमांश का और अपने आय का दशमांश देना चाहिए। वे कलीसिया के लिए एक उदाहरण है और उन्हे अपने रूपयों के साथ सैदा करने में खुला और ईमानदार होना है। (यहा तक कि वार्षिक कलीसिया की आय को कलीसिया के सदस्यों के सामने जांच के लिए उपलब्ध कराना चाहिए)

दशमांश न देने के लिए पश्चाताप करने का सुझाव प्रार्थना

" स्वार्गीय पिता, मैं स्वीकार करता हूँ कि हर एक चीज जो स्वर्ग और पृथ्वी में है वो आपका है। मेरे पास जो कुछ है वह आपका है। जो कुछ आपने मुझे सौपा है उसके लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। अब मैं समझता हूँ कि यह दशमांश पवित्र है और यह आपका हैं। मैं क्षमा मांगता हूँ कि मैने आपके दशमांश को आपको नही दिया हैं (मलाकी 3:8–12)। आज के दिन मैं जो आपका था उसे रखे रहने के लिए क्षमा मांगता हूँ। मैं आपसे क्षमा की मांग करता हूँ। आज के दिन से मेरे सारे आय का दशमांश देने के लिए समपर्ण करता हूँ। अब मैं अतीत में न दिये दशमांश से आपके अनुग्रह के द्वारा अपने आप को स्वतंत्र करता हूँ। धन्यवाद पिता कि आपका वचन कहता है कि जो कल्पनाए आप मेरे लिए करते है वे हानि के नही वरन कूशल के ही है (यिर्मयाह 29:11) और कि आप मेरे तरफ से मेरे निगलने वाले को घुड़केगें। धन्यवाद पिता। कृपया मुझे दुसरो के लिए और अपने राज्य के उद्देश्य के लिए आर्थिक आशीषों की एक नदी बनाइए। यीशु के नाम में, आमीन"।